सम्पूर्णता वर्ष

बेहद का वैराग्य – 1

01.07.2014

1. **स्वमान** – मैं ब्रह्मा बाप समान बेहद का वैरागी हूँ।

- जैसे ही ब्रह्मा बाबा को पुरानी दुनिया के विनाश और नयी दुनिया के साक्षात्कार हुए, उनमें बेहद का वैराग्य आ गया। इसी वैराग्य ने उनसे सर्वस्व त्याग भी कराया तो उन्हें योगेश्वर व विश्वेश्वर भी बनाया। ब्रह्मा बाबा का वैराग्य अंत तक `अखण्ड` रहा। ऐसे ही फॉलो फादर।

2. **योगाभ्यास** –

अ. स्वयं से बातें करें और अपनी अंतिम यात्रा को देखें...मैंने शरीर छोड़ दिया है...पुराने शरीर के साथ-साथ मेरे सगे-संबंधी सब छूट गए हैं...कोई भी तो मेरा नहीं...वस्तु, व्यक्ति, वैभव सब छूट गये...जिन्हें मैं जीवन भर अपना समझता रहा, वे वास्तव में मेरे नहीं थे...जिन चीजों को पाने के लिए मैंने अपना सारा जीवन लगा दिया, उनमें से कुछ भी मेरे साथ नहीं जा रहा है...अब मेरी आँखें खुली हैं...अब मैंने सत्य और असत्य को समझा है...काश मैं जीते-जी ये सबकुछ समझ पाता...!!

ब. महाविनाश का भयंकर दृश्य...चारों ओर हाहाकार, मारकाट, अत्याचार...खून-ए-नाहक खेल...पाँचों तत्वों और पाँचों विकारों का फुल फोर्स से आक्रमण...मैं साक्षी होकर सारा दृश्य देख रहा हूँ और विश्व कल्याणकारी बापदादा के साथ सभी को गति-सद्गति का वरदान दे रहा हूँ...।

स. अंतिम दृश्य को इमर्ज करें...सभी मरे पड़े हैं और ज्योतिबिंदु आत्माएँ वापस घर की ओर जा रही हैं...मैं भी अपना स्थूल कलेवर छोड़कर बाबा के साथ परमधाम की ओर जा रहा हूँ...।

3. **धारणा – बेहद की वैराग्य वृत्ति**

- `जब तक बेहद की वैराग्य वृत्ति को इमर्ज नहीं करेंगे, तब तक मुक्तिधाम के गेट नहीं खुलेंगे।`
- `जब तक आप निमित्त आत्माओं में बेहद की वैराग्य वृत्ति नहीं है, तो अन्य आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति नहीं आ सकती और जब तक वैराग्य वृत्ति नहीं होगी, तब तक बाप का परिचय सबको नहीं मिल सकता।` – **शिव भगवानुवाच**

4. **चिंतन** –

– ऐसे 10 संकल्प लिखें जो आपको पुरानी देह, पुरानी दुनिया और पुराने संस्कारों से वैराग्य दिलाता हो ?

5. **तपस्वियों प्रति** – प्रिय तपस्वियों ! **'अब हमें सबकुछ छोड़कर वापस घर जाना है'** - यह स्मृति जीवन में वैराग्य लाती है। यहाँ वैराग्य सूनेपन या सूखेपन का नाम नहीं परन्तु पदार्थों का उपयोग करते हुए उनसे न्यारा रहने की स्थिति है अर्थात् कोई भी वस्तु हमारे लिए बन्धन न बने - यह है वैराग्य। हम अपने जीवन में वैराग्य की भावना भरें तो व्यर्थ स्वतः समाप्त हो जाएगा और हम बाप समान फरिश्ते बन जायेंगे।